हैलन केलर

हैलन केलर

अध्याय 1

ग्रीष्म ऋतु थी, गर्मी अधिक थी.
सन 1880 का वर्ष था.
दूर दक्षिण के
एक छोटे से नगर
अल्बामा में
एक स्वस्थ लड़की का जन्म हुआ था.
उसके माता-पिता उसे बहुत प्यार करते थे.
लड़की का नाम था हैलन केलर.
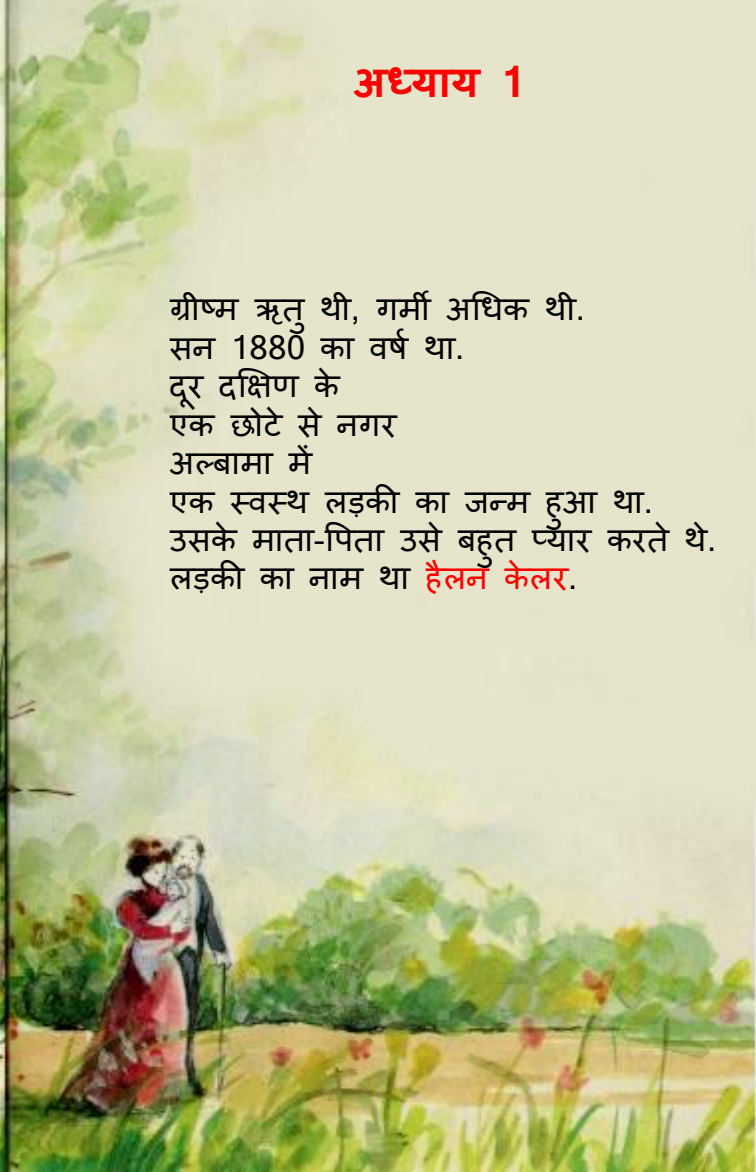
फिर वह बच्ची बीमार हो गई.
अभी वह दो वर्ष की भी न थी.
दिन पर दिन उसका बुखार बढ़ता गया.
नौकरों ने सहायता करने का प्रयास किया.
माता-पिता ने सहायता करने का
प्रयास किया.
लेकिन डॉक्टर ने निराशा में
अपना सिर हिलाया.
“इससे अधिक हम कुछ नहीं कर सकते,”
उसने कहा.
“बच्ची शायद जीवित नहीं रहे.”
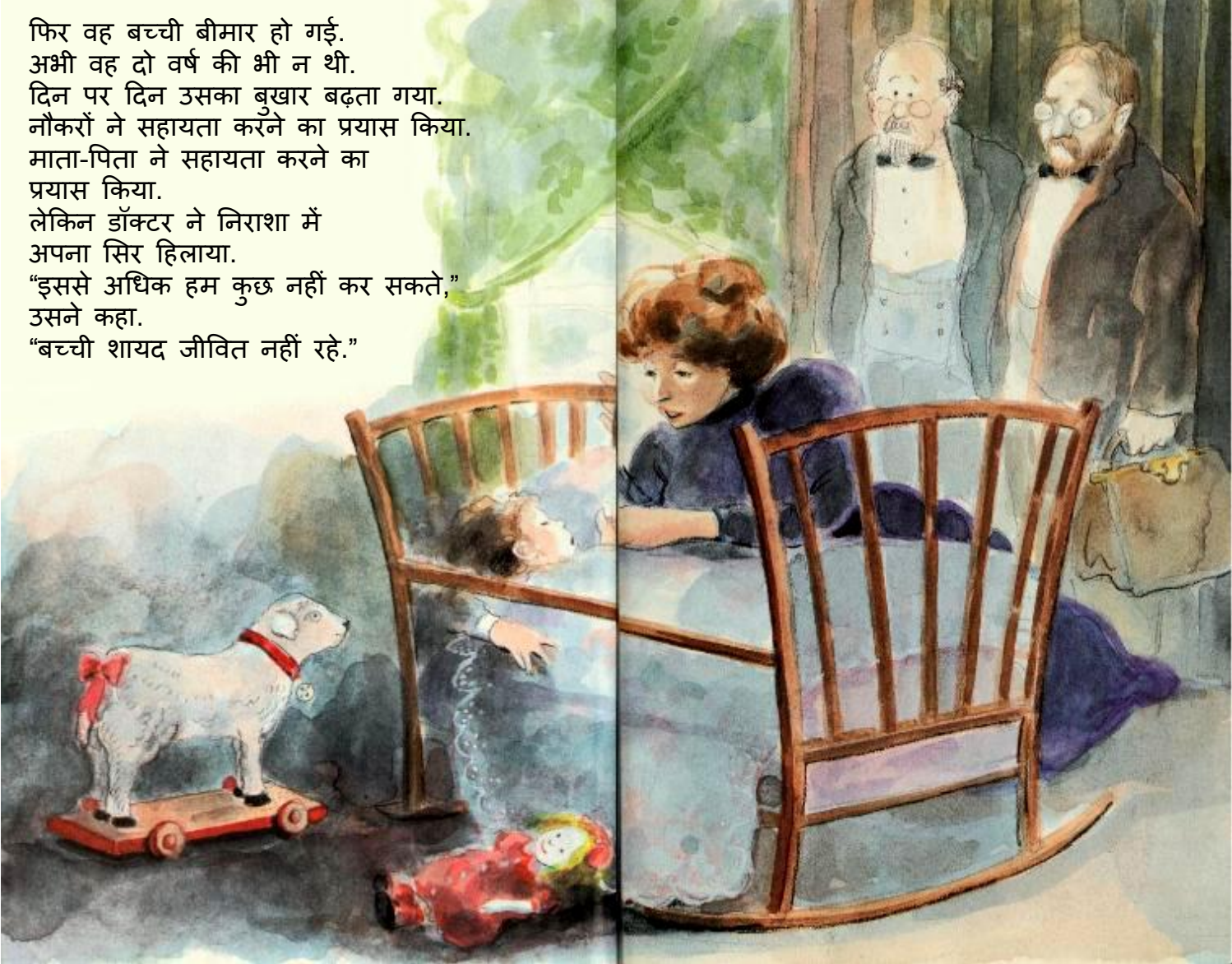
हैलन बच गई.
लेकिन बीमारी के बाद
वह पहले जैसी न थी.
“कुछ बहुत ही गलत हुआ है,”
उसकी माँ ने कहा.
आखिरकार उन्हें पता लगा.
बच्ची अंधी और बहरी हो गई थी.

बच्ची बढ़ी हुई,
एक छोटी लड़की बन गई.
उसके माता-पिता को
उस पर दया आती.
हैलन अकसर रोती रहती
और माँ को पकड़े रहती.
“अभागी बच्ची को दे दो
जो वह चाहती है,”
उसके पिता कहते.

हैलन बहरी और अंधी थी
लेकिन वह बुद्धिमान भी थी.
वह हर किसी की नकल करती थी.
कभी-कभी वह अपने पिता का
रूप बना लेती थी.
वह उनका चश्मा पहन लेती थी
और उनकी तरह अख़बार उठा लेती थी.

लोगों को लगता था कि
हैलन कुछ सीख नहीं सकती.
लेकिन उसकी माँ सहमत नहीं थी.
"हैलन बहुत होशियार है," वह कहती.
"लेकिन अपनी बात हम उसे कैसे समझायें?
वह तो जैसे अपने भीतर ही कैद है."

अध्याय 2

हैलन उद्दंड होती जा रही थी.
वह किसी को अपने बाल
संवारने न देती थी.
उसके कपड़े हमेशा गंदे होते थे.
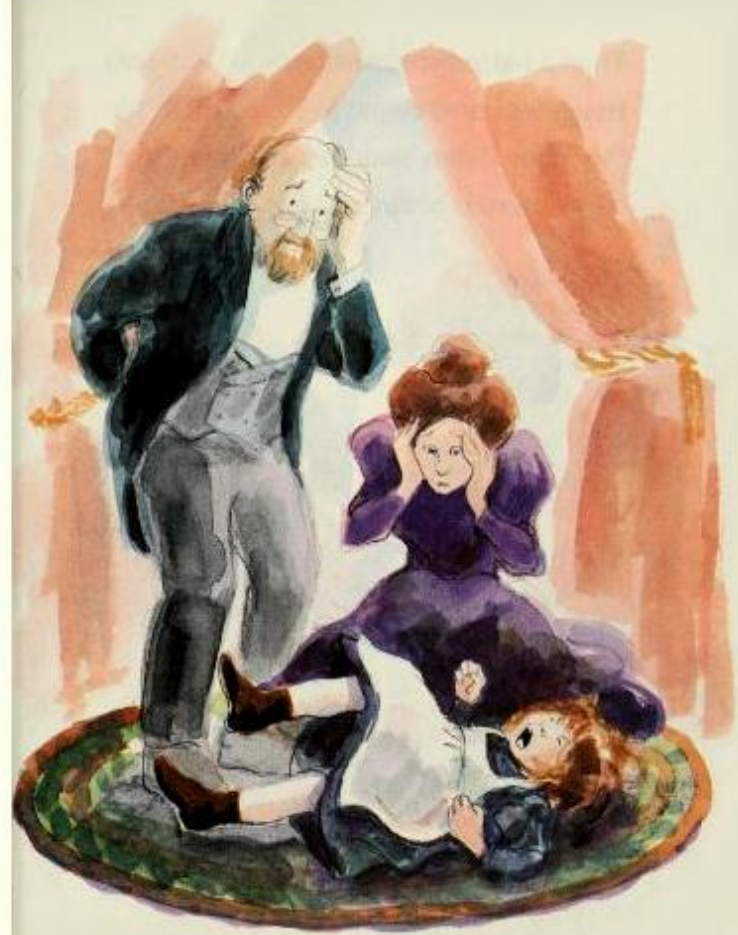
हैलन प्राय क्रोधित हो जाती थी.
कभी-कभी वह फर्श पर लेट जाती थी
और हाथ-पाँव मारने लगती थी.

फिर उसकी छोटी बहन का जन्म हुआ.
हैलन इस बात से प्रसन्न न थी.
“मेरी हैलन, बेचारी,” उसकी माँ ने कहा.
“अब मेरी गोद में हमेशा यह बच्ची रहती है.”

एक दिन हैलन ने बच्ची को
पालने से नीचे गिरा दिया.
“नहीं, हैलन!” माँ चिल्लाई.
“हम क्या करें?
हमें किसी की सहायता लेनी होगी.”

केलर परिवार प्रसिद्ध एलेग्जेंडर ग्रैहम बेल
से भेंट करने के लिये वाशिंगटन डीसी आया.
शायद वह हैलन की सहायता कर पायें.
डॉक्टर बेल ने टेलीफोन
का आविष्कार किया था.
वह बहरे लोगों के शिक्षक भी थे.
“हैलन सीख सकती है,”
डॉक्टर बेल ने कहा.
“लेकिन उसके लिये
एक ख़ास शिक्षिका चाहिये.
बोस्टन में स्थित पर्किन्स स्कूल को
आप एक पत्र लिखें और,
एक शिक्षिका भेजने के
लिये उनसे कहें.”

हैलन के पिता ने स्कूल को पत्र लिखा.
शीघ्र ही उन्हें उत्तर मिला.
“भगवान् की कृपा है.” वह बोले.
“पर्किन्स स्कूल एक शिक्षिका भेज रहा है.”

अध्याय 3

दिवस 3 मार्च 1887 की दुपहर
एक शिक्षिका आयी.
उस समय हैलन घर के प्रवेश द्वार
के निकट खड़ी थी.
अचानक उसने सीढ़ियों पर
किसी के पाँव की आवाज़ महसूस की.
उसने समझा कि उसकी माँ आई थी.
और उसने अपना हाथ बढ़ा दिया.

किसी ने हैलन का हाथ पकड़ लिया
और उसे अपने पास खींच लिया.
वह हैलन की माँ न थी,
इसलिए लड़की पीछे हट गई.
वह ऐनी सलिवन थी, उसकी शिक्षिका.
हैलन को संसार से परिचित कराने के लिये
वह युवती बोस्टन से आई थी.
और वह युवती उससे प्यार
करने के लिये आई थी.
जीवन के बाद के दिनों में
हैलन इस दिन को अपनी आत्मा का
जन्मदिन बतलाने लगी.

पहले दिन ही मिस सलिवन ने
हैलन को एक गुड़िया दी.
“ग..उ..ड़...इ...य...आ...गुड़िया, ”
मिस सलिवन ने बताया.
उसने अंगुली से उस शब्द के हिज्जे
हैलन के हाथ पर लिखे.
उसने सारे अक्षर
एक ख़ास वर्णमाला में लिखे.
यह वर्णमाला थी
हाथों के संकेत की.

हैलन ने अपनी शिक्षिका की नकल की.
उसने गुड़िया शब्द के हिज्जे बनाये.
लेकिन वह समझ न पाई कि
वह क्या कर रही थी.

शीघ्र हो मिस सलिवन समझ गई कि
हैलन वही करती थी जो वह करना चाहती थी.
डिनर के समय हैलन
कुर्सी पर नहीं बैठती थी.
वह मेज़ के चारों ओर घूमती थी
और हर किसी की प्लेट से खाना ले लेती थी.
और वह अँगुलियों से खाना खाती थी.
“आप हैलन के साथ ठीक नहीं कर रहे,”
मिस सलिवन ने उसके परिवार से कहा.
“उसे सिखाना होगा कि
उसे कैसा व्यवहार करना चाहिये.”

बहुत भयंकर लड़ाइयाँ होती थीं.
“हैलन, तुम वही करोगी जो मैं बताऊंगी,”
मिस सलिवन चिल्लाई,
हालाँकि हैलन उसे सुन न सकती थी.
उसने हैलन को कुर्सी पर बिठाया.
हैलन फिर खड़ी हो गयी.
उसने हैलन को चम्मच पकड़ाया.
हैलन ने चम्मच फेंक दिया.
उसने हैलन को अपनी प्लेट में खाना दिया.
हैलन ने प्लेट कमरे में दूर फेंक दी.

हर बार खाने के समय लड़ाई होती.
लेकिन मिस सलिवन जीतने लगी.
आखिरकार हैलन कुर्सी पर बैठ गयी.

माँ को हैलन की चिंता होती थी.
“मिस ऐनी, आप हैलन पर ज़्यादा ही
सख्ती कर रही हैं,” मिसेज़ केलर ने कहा.
मिस सलिवन अटल थी.
“हैलन को नियंत्रित किये बिना
मैं उसे कुछ नहीं सिखा सकती.”

मिस सलिवन ने मिस्टर केलर से बात की.
“कुछ समय के लिए मुझे हैलन के साथ
अकेले रहना होगा,” उसने कहा.
“क्या हम बगीचे में स्थित छोटे घर में
रहने चले जाएँ?”
“सिर्फ दो सप्ताह के लिए,” मिस्टर केलर ने कहा.
“उससे अधिक समय नहीं.”

हैलन के माता-पिता लंबी सैर के लिये
घोड़ा-गाड़ी में उसे ले गये.
फिर वह बगीचे के अंदर
छोटे घर में उसे ले आये.
इस तरह हैलन को पता न चला कि
वह घर के निकट ही थी.

अध्याय 4

मिस सलिवन कठोर थी पर दयालु भी थी.
धीरे-धीरे हैलन उसे पसंद करने लगी.
उस छोटे घर में मिस सलिवन दिन-रात
शब्दों के हिज्जे हैलन को बताती रही.
म-ओ-त-ई—मोती
क-उ-त्-त-आ — कुत्ता
प-आ-न-ई—पानी
हैलन शिक्षिका को वही हिज्जे
हाथ पर लिख कर बताती.
लेकिन उसे अभी भी समझ न आ रहा था
कि वह क्या कर रही थी.
“हैलन, हर शब्द का एक अर्थ होता है!”
मिस सलिवन ने कहा.
वह प्रयास कर रही थी कि
हैलन शब्दों के अर्थ समझने लगे.

दो सप्ताह बीत गये.
हैलन और मिस सलिवन बड़े घर
लौट आये.
हैलन अभी भी हाथ के संकेत
न समझ पा रही थी.
लेकिन उसकी शिक्षिका ने हिम्मत न हारी.
एक दिन वह हैलन को
पानी और मग शब्द सिखा रही थी.
हैलन बार-बार इन शब्दों को
उलझा रही थी.
“हमें थोड़ा विश्राम करना चाहिये,”
मिस सलिवन ने कहा.
“हम बाहर बगीचे में टहलेंगे.”

सुहावना दिन था, धूप निकली हुई थी.
हैलन और उसकी शिक्षिका
बगीचे में आ गईं.
दोनों पानी के पंप के निकट आईं.
मिस सलिवन के मन में एक विचार आया.
वह पानी का पंप चलाने लगी.
पानी बहने लगा.
मिस सलिवन ने हैलन का हाथ
पानी में डाल दिया.
फिर उसने पानी शब्द के हिज्जे किये.
“पानी, हेलेन! प-आ-न-ई!”

अचानक हैलन समझ गयी.
वह समझ गयी की प-आ-न-ई का अर्थ था
वह गीली वस्तु जो उसके हाथ पर बह रही थी.
वह समझ गयी कि 'पानी' एक शब्द था.
वह समझ गयी कि शब्द ही संसार में
सबसे महत्वपूर्ण थे.
शब्द ही उसे वह सब बताएँगे जो
वह जानना चाहती थी.
"मेरा हृदय गाने लगा," उसने बाद में लिखा.
"मुझे लगा कि जैसे मर जाने के बाद मैं फिर से
जीवित हो गयी थी."

अचानक हैलन हर वस्तु का नाम
जानना चाहती थी.
फ-ऊ-ल—फूल
ध-र-त-ई —धरती
फिर उसने मिस सलिवन की ओर
संकेत किया.
मिस सलिवन ने हिज्जे किए.......
श-इ-ज्ञ-इ-क-आ—शिक्षिका.

मिस सलिवन जान गई कि
हैलन समझ गयी थी.
वह प्रसन्नता से खिल उठी.
“मुझे लगा कि ख़ुशी से मेरा हृदय फट जायेगा,”
उसने लिखा.

हैलन को साथ ले, मिस सलिवन भाग कर घर आई.
जो कुछ अभी घटा था उसने सब को बताया.
हैलन की माँ ख़ुशी में रोने लगी.
“मेरी प्यारी बच्ची,” वह बोली.
मिसेज़ केलर फिर हैलन की शिक्षिका की ओर घूमी.
“मिस ऐनी, आप ने जो किया है
वह चमत्कार ही है!”
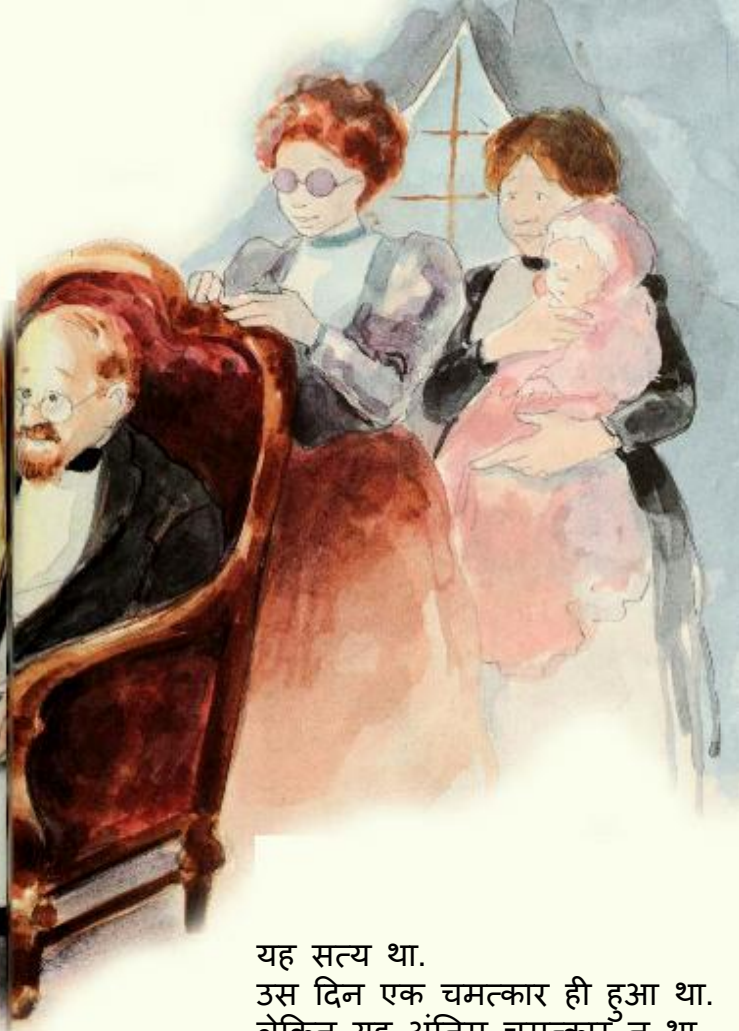
यह सत्य था.
उस दिन एक चमत्कार ही हुआ था.
लेकिन यह अंतिम चमत्कार न था.
हैलन केलर के जीवन में
ऐसे कई चमत्कारों हुए.

हैलन केलर 1880-1968

आने वाले वर्षों में
हैलन ने पढ़ना-लिखना सीखा.
उसने बोलना भी सीख लिया.
वह स्कूल गई.
उसने रेडक्लिफ कॉलेज से ओनर्स के
साथ स्नातकोत्तर की उपाधि अर्जित की.
ऐनी सलिवन ने स्कूल काल में
हैलन की पूरी सहायता की.
लगभग पचास वर्षों तक
वह इकट्ठे रहे.
शिक्षिका के देहांत तक
वह एक साथ रहे.

अपने जीवन में हैलन ने पाँच किताबें लिखीं.
उसने कई जगहों की यात्रा की.
उसने राजाओं और राष्ट्रपतियों से भेंट की.
संसार में जगह-जगह
कई लोगों को संबोधित किया.
अपने अधिकांश कार्य उसने अंधों या
बहरों की सहायता के लिए किए.
वह स्नेही और दयालु महिला थी.
लोग भी उसे बहुत प्यार करते थे.
हैलन केलर के जीवन ने
कई लोगों को प्रेरित किया.

एक हाथ से अंग्रेजी के अक्षर संकेत

A B C D
E F G H
I J K L
M N O P
Q R S T
U V W X
Y Z

समाप्त